

2 John

¹ Greetings from the Elder.

To the lady chosen by God and to her children.

I truly love all of you. And I am not the only one. All those who know the truth love you in the same way. ² We love you because of the truth—the truth that lives in us. That truth will be with us forever.

³ Grace, mercy, and peace will be with us from God the Father and from his Son, Jesus Christ, as we live in truth and love.

⁴ I was very happy to learn about some of your children. I am happy that they are following the way of truth, just as the Father commanded us. ⁵ And now, dear lady, I tell you: We should all love each other. This is not a new command. It is the same command we had from the beginning. ⁶ And loving means living the way he commanded us to live. And God's command is this: that you live a life of love. You heard this command from the beginning.

⁷ Many false teachers are in the world now. They refuse to say that Jesus Christ came to earth and became a man. Anyone who refuses to accept this fact is a false teacher and the enemy of Christ. ⁸ Be careful! Don't lose the reward we* have worked for. Be careful so that you will receive all of that reward.

⁹ Everyone must continue to follow only the teaching about Christ. Whoever changes that teaching does not have God. But whoever continues to follow the teaching about Christ has both the Father and his Son. ¹⁰ Don't accept those who come to you but do not bring this teaching. Don't invite them into your house. Don't welcome them in any way. ¹¹ If

⁸ we Some Greek copies have "you."

2 यूहन्ना

¹ मुझे बुजुर्ग की ओर से।

उस महिला को जो परमेश्वर के द्वारा चुनी गयी है तथा उसके बालकों के नाम जिन्हें मैं सत्य के सहभागी व्यक्तियों के रूप में प्रेम करता हूँ। केवल मैं ही तुम्हें प्रेम नहीं करता हूँ, बल्कि वे सभी तुम्हें प्रेम करते हैं जो सत्य को जान गये है। ² वह उसी सत्य के कारण हुआ है जो हममें निवास करता है और जो सदा सदा हमारे साथ रहेगा।

³ परम पिता परमेश्वर की ओर से उसका अनुग्रह, दया और शांति सदा हमारे साथ रहेंगी तथा परम पिता परमेश्वर के पुत्र यीशु मसीह की ओर से सत्य और प्रेम में हमारी स्थिति बनी रहेगी।

⁴ तुम्हारे पुत्र-पुत्रियों को उस सत्य के अनुसार जीवन जीते देख कर जिसका आदेश हमें परम पिता से प्राप्त हुआ है, मैं बहुत आनन्दित हुआ हूँ ⁵ और अब हे महिला, मैं तुम्हें कोई नया आदेश नहीं बल्कि उसी आदेश को लिख रहा हूँ, जिसे हमने अनादि काल से पाया है हमें परस्पर प्रेम करना चाहिए। ⁶ प्रेम का अर्थ यही है कि हम उसके आदेशों पर चलें। यह वही आदेश है जिसे तुमने प्रारम्भ से ही सुना है कि तुम्हें प्रेमपूर्वक जीना चाहिए।

⁷ संसार में बहुत से भटकाने वाले हैं। ऐसा व्यक्ति जो यह नहीं मानता कि इस धरती पर मनुष्य के रूप में यीशु मसीह आया है, वह छली है तथा मसीह का शत्रु है। ⁸ स्वयं को सावधान बनाए रखो! ताकि तुम उसे गँवा न बैठो जिसके लिए हमने* कठोर परिश्रम किया है, बल्कि तुम्हें तो तुम्हारा पूरा प्रतिफल प्राप्त करना है।

⁹ जो कोई बहुत दूर चला जाता है और मसीह के विषय में दिए गए सच्चे उपदेश में टिका नहीं रहता, वह परमेश्वर को प्राप्त नहीं करता और जो उसकी शिक्षा में बना रहता है, परम पिता और पुत्र दोनों ही उसके पास हैं। ¹⁰ यदि कोई तुम्हारे पास आकर इस उपदेश को नहीं देता है तो अपने घर उसका आदर सत्कार मत करो तथा उसके स्वागत में 'नमस्कार' भी मत करो। ¹¹ क्योंकि जो ऐसे व्यक्ति

⁸ हमने कुछ यूनानी प्रतियों में "तुमने" है।

you do, you are helping them with their evil work.

¹²I have much to say to you. But I don't want to use paper and ink. Instead, I hope to come visit you. Then we can be together and talk. That will make us very happy. ¹³The children of your sister* who was chosen by God send you their love.

का सत्कार करता है, वह उसके बुरे कामों में भागीदार बनता है।

¹²यद्यपि तुम्हें लिखने को मेरे पास बहुत सी बातें हैं किन्तु उन्हें मैं लेखनी और स्याही से नहीं लिखना चाहता। बल्कि मुझे आशा है कि तुम्हारे पास आकर आमने-सामने बैठ बातें करूँगा। जिससे हमारा आनन्द परिपूर्ण हो। ¹³तेरी बहन* के पुत्र-पुत्रियों का तुझे नमस्कार पहुँचे।

13 sister Sister of the "lady" in verse 1. This might be another woman or another church.

13 बहन पद 1 के "महिला" की बहन। यहाँ यह ऐसा मालूम पड़ता है कि यह दूसरी महिला है, या फिर कोई दूसरा कलीसिया।